पंचकल्याणक में विराजमान होंगी 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएं

प्रदीपकुमार जैन, भोपाल । भानपुर जिनालय में 29 नवंबर से आयोजित पंचकल्याणक महोत्सव के दौरान 1008 श्री पार्श्वनाथ भगवान की 9 फीट ऊंची प्रतिमा सहित 24 तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ विराजमान हुई । आचार्यश्री 108 विद्यासागरजी महाराज के सान्निध्य में प्रतिमाओं की प्राण-प्रतिष्ठा सआनंद संपन्न हुयी । भानपुर मंदिरजी की स्थापना सन् 1988 में अशोककुमारजी जैन, शांति सीड्स के अथाह प्रयासों से स्थापित किया । उस समय केवल चार घर की समाज थी, भानपुरा मंदिरजी के निर्माण में बहुत परेशानियाँ आई । 18 वर्षों तक सतत् अदालत में मुस्लिम व ईरानियों के खिलाफ केस लड़ा । श्री अशोक कुमारजी जैन के अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि आज इस जगह भव्य जिनालय का निर्माण हो पाया है और गुरुवर का आशीर्वाद हम सबको मिला है । श्री अशोकजी ने मंदिर का केस जीतने के बाद उसी मुस्लिम से 18 लाख में यह प्लाट खरीदा जिस पर मंदिरजी का निर्माण हुआ है इसके बाद ईरानियों को हटाने व जमीन खाली कराने में अशोककुमारजी सतत प्रयासरत रहे और इस भव्य जिनालय के निर्माण में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया । गुरुवर के आशीर्वाद से पंचकल्याणक का समापन गजरथ फेरी के साथ सआनंद संपन्न हुया ।

सौधर्म इन्द्र
श्री अशोक-आशा जैन

सौधर्म इन्द्र
श्री निर्मल-सुमन जैन

यज्ञनायक
सुनील-अंजना जैन

यज्ञनायक
राकेश-रंजना जैन

आमंत्रण

आगामी 23 से 30 दिसम्बर तक सिद्धक्षेत्र पावागिरीजी (पवाजी) में सिद्धचक्र महामंडल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ का आयोजन लुहाँगीपुरा विदिशा निवासी हीरालाल जैन, राकेश जैन, अभिषेक जैन, अरहम जैन, नीरव जैन परिवार द्वारा कराया जा रहा हैं। विधान के लिए मंगल आर्शीवाद परम पूज्य आचार्यश्री 108 विद्यासागर जी महाराज का प्राप्त हुआ है एवं मंगल सानिध्य आचार्य श्री के परम प्रभावक शिष्य मुनि श्री 108 सुव्रत सागरजी महाराज का रहेगा । विधान बाल ब्रह्मचारी श्रद्धेय श्री अशोक भैयाजी एवं विदिशा निवासी पंडित श्री महेन्द्र कुमार जी के निर्देशन में संपन्न होगा । दिनांक 23 दिसंबर 2016 को ध्वाजारोहण, घटयात्रा तथा विधान प्रारंभ होगा तत्पश्चात् प्रतिदिन प्रातः नित्य नियम पूजा, विधान, प्रवचन, दोपहर में तत्वचर्चा, सायंकाल प्रतिक्रमण, सामायिक, आरती, प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न होंगे दिनांक 30 दिसंबर 2016 को प्रातः नित्य नियम पूजा, विधान के पश्चात् हवन एवं श्रीजी की शोभायात्रा का आयोजन होगा । बाहर से पधारे हुए सभी अतिथियों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था पुण्यार्जक परिवार द्वारा क्षेत्र पर की गई हैं । पुण्यार्जक परिवार सभी साधर्मी बन्धुओं का सादर आमंत्रित करता है कि आयोजन में पधारकर सिद्धों की आराधना कर पुण्य संचय प्राप्त करें ।

व्यसन मुक्त जीवन विश्व कल्याण में समर्थ

- आर्यिका विविक्त श्री

प्रवीण जैन, झाँसी। श्री कल्पद्रुम महामंडल विधान एवं विश्व शांति महायज्ञ की दस दिवसीय आहूतियों के उपरांत आज महिला संत आर्यिका विविक्त श्रीमाताजी के ससंघ सानिध्य में चक्रवर्ती की विशाल दिग्विजय यात्रा निकाली गई ।

शोभायात्रा में स्वर्णाभा के विमान में 1008 भगवान श्री शांतिनाथ स्वामीजी की प्रतिमा विराजमान थी, तो वहीं चक्रवर्ती सुनील रजनी जैन, सौधर्म इन्द्र प्रवीणकुमार राखी जैन, महायज्ञ नायक अखिल, कुबेर डॉ. जिनेन्द्र जैन, बाहुबलि आलोक जैन समेत प्रमुख पात्र बग्घियों में सवार होकर चल रहे थे । सबसे आगे प्रतिष्ठाचार्य पं. प्रदीप जैन शास्त्री ललितपुर हाथी पर धर्म ध्वजा थामे हुए थे। शोभायात्रा गांधी रोड, तिलयानी बजरिया कटरा, सुभाषगंज, रानीमहल, कोतवाली होकर सिविल लाइन स्थित चन्द्र प्रभु जिनालय पहुंची यहां विशाल धर्म सभा में परिवर्तित हो गई ।

महायज्ञ के ऐतिहासिक सफलता पर संदेश देते हुए संत मां ने कहा कि बूंद बूंद से गागर भरती है और गागर गागर से सागर भरता है । भारत देश में हमारी संस्कृति, व्यसन मुक्त जीवन विश्व का नेतृत्व कर सबका कल्याण करने में समर्थ है । पूर्व केन्द्रीय मंत्री प्रदीप जैन आदित्य ने गणाचार्य श्री विराग सागरजी महाराज के साधुजनों का विशाल यति सम्मेलन झांसी में कराने हेतु माँ श्री से निवेदन किया । इस सम्मेलन में लगभग 300 साधुजन शामिल होंगे । वरिष्ठ पत्रकार श्री कैलाशचन्द्र जैन ने माताजी के सानिध्य में संपन्न महायज्ञ को कल्याणकारी बताते हुए कहा कि 17 वर्षों बाद यह उपलब्धि पुन: प्राप्त हुई है । समारोह की अध्यक्षता पंचायत अध्यक्ष एड. प्रकाशचन्द्र जैन ने की ।

इस अवसर पर चातुर्मास कलश स्थापित करने वाले सुभाष साधना जैन (सत्यराज), श्रीमती कमलेश रिषभ भंडारी एवं गौतम जैन को माँ श्री ने मंगल कलश सौंपा । सर्वश्री डा. हीरालाल जैन, रविन्द्र जैन रेलवे, जितेन्द्र चौधरी, शिखरचन्द्र जैन, राजेश जैन, चक्रेश जैन, संजय सिंघई, सुरेन्द्र सर्राफ,

जिनेन्द्र सर्राफ, प्रदीप जैन (विश्वपरिवार), डॉ. के.सी. जैन, डॉ. विनय जैन, निलय जैन, भुवनेश वर्मा, भरत राय, राजीव अहिंसा, संजय कर्नल सलाहकार, अशोक जैन रतन सेल्स, श्रीमती अंजना जैन, कविता जैन, सरोज आदि को सम्मानित किया गया।प्रारंभ में शास्त्र भेंट श्रीमती प्रभा जैन, राजेश जैन ने दीप प्रज्जवलन चक्रेश जैन ने संचालन महामंत्री प्रवीण जैन ने एवं आभार ज्ञापन पंचायत मंत्री रिषभ जैन ने किया ।

महिलाएं घर पर ही अपने हथकरघा पर वस्त्र बनाती आई है । इसी सुविचार को वर्तमान में क्रियान्वित करने के लिए आज जगह जगह हथकरघे लगाने की महती योजना शुरु की जा रही है । इन्दौर में आचार्य गुरुवर की सुयोग्य शिष्या 105 आर्यिका माँ आदर्शमति माताजी के मंगल वर्षावास की ही पावन प्रेरणा थी कि शहर के अनेक स्थानों में हथकरघों केन्द्रों का जोर शोर से शुभारंभ हुआ । इस पवित्र कार्य का बीड़ा उठाया ब्रह्मचारिणी रेखा दीदी ने जो कि डी एस पी के प्रतिष्ठित पद से स्वेच्छिक सेवा निवृत्ति लेकर धर्माराधना के साथ ही अहिंसक रोजगार के लिए तत्पर है । इन्होंने हर कॉलोनी में जाकर हथकरघे हेतु लोगों को जागृत किया । नगर के अनेक स्थानों पर हथकरघा प्रशिक्षण और वस्त्र विक्रय केंद्र स्थापित किये गए है । तिलक नगर में सर्वाधिक 51 हथकरघा लगाये गए हैं और इसे मुख्य प्रशिक्षण केंद्र बनाया गया है । इन केन्द्रों पर विशुद्ध भारतीय तकनीक से अहिंसक कपडा उद्योग को जन आंदोलन के रुप में विस्तारित किया जावेगा, जो न केवल वस्त्र निर्माण के कौशल विकास के माध्यम से देश से बेरोजगारी को दूर कर आर्थिक आत्मनिर्भरता, सामाजिक समरसता, ऐतिहासिक, व्यापारिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों की पुनर्स्थापना का पवित्र कार्य करेगा । साथ ही साथ अहिंसामय खानपान और पहनावे को लाकर जैन समाज के प्रमुख लक्ष्य को भी प्राप्त करेगा ।

इन हथकरघा प्रशिक्षण केन्द्रों पर सभी शाकाहारी अहिंसक महिला पुरुषों को 6 माह तक निःशुल्क प्रशिक्षण देने के साथ प्रतिमाह मानदेय भी दिया जायेगा । हथकरघा सिखाने के लिए 5 प्रशिक्षकों की टीम इंदौर आई हुई है जो 15 दिनों तक 50 महिलाओं को प्रशिक्षित करेगी । इससे व्यक्ति को सम्पूर्ण रोजगार का साधन प्राप्त होगा । सर्वप्रथम इन केंद्रों पर स्वयं निर्मित अहिंसक वस्त्रों से मंदिरजी में प्रक्षालन के छन्ने, पानी छानने के छन्ने, आर्यिका माताजी, ब्रह्मचारी भैया और बहनों के वस्त्र बनाये जाएंगे जो देशभर में मंदिरों पर पहुचाये जाएंगे । ये सभी वस्त्र एक कमेटी द्वारा खरीद कर आर्यिका माताजी, ब्रह्मचारी आदि को निःशुल्क दिये जाएंगे । हथकरघे के माध्यम से आचार्य गुरुवर हमारे अंतिम तीर्थंकर भगवान श्री महावीर स्वामीजी का संदेश ''जियो और जीने दो'', ''अहिंसा परमो धर्मः'', ''जीवाणाम रक्खणम धम्मो'', ''हिंसा वज्जिय धम्मो'' के सिद्धांत का वास्तविक प्रयोग करना चाहते है । हथकरघा हमें शुद्ध वस्त्र देगा जिससे हमारे आचार विचार भी सात्विक होंगे । यह हमारे प्रधानमंत्रीजी के ''मेक इन इंडिया'' के सुविचार को भी प्रबलता देगा और देश की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाएगा ।